अथ कौ मंगल

घूकर पल्लव चिवती नौ सरवनी सरीर । दसादस
हसनी जानीयो देह बिच जो गंभीर ॥ उत्तर नीवी धान प्रथम दंड १
[illegible] ससा [illegible] रंग कुच विख्य [illegible] हय पर गंट पुरुष ये
चार नख शिख तौल ज्ञान कहूं सकल विचार बिचा
र ॥ [illegible] दोहरा ॥ कुच तन कोमल मं
धुर बचन [illegible] वंत स्वर सो जान र तन नोद अति रुच
नहीं ससा करत बहु हसिया नं [illegible]
[illegible] दोहरा [illegible] धुर वचन मृग मद तन चपल बु
चित धीर । चार कुचार सा धु अति भारवी कामं
कनक शरीर ॥ [illegible]
दोहरा ॥ ब्रिख अति भारी पुरुष बंदाल ता कूर सुभाव ॥
कपटी कछु लंपट नहीं काम केल बहु चाव ॥ [illegible]

अथ तुरंगता ये कल संत बरननं दोहरा तनै दूरी
रघ दीर घाघर न दीर घनखशि च उभरत रन
संग तिर मैं ल माही सम आधि क तुरंग सोरठा
चतुर खह नौ जान हु आदस करपलव पर ग ट
मदनें कुशपरवान ससा अद जानत चतुर दोह
रा तनैं चर सोनैं जोरत ता समः आनः रस कजो कोये मदनं
कुशमरदन कौ जीये पत कठोर दिढ होये अथ भरत
बरननं दोहरा ससा पुरुष पद मनीं तिर आस कितया
कौनाम उभः परस पर लित बढः औरन सो न हौ का भा
हये करनी हरनी हरन वृषभ संखनी संग। रन का
मन सुख उपजः बढः परेम हु हसंग अथ उ बरत
बरननं दोहरा वृषभ भरंग मौ संग मौर तुरंग मनुरंजनी
हरन वीनमें उ पद्मनी।

अन बच इनके अंग परगट ऊचरत जानीयः अ — येन अ
परऊचरतवरनतं ग्रेन तुरंग नीसा थपुरु षव चसम — सेवम
हरनीत यो इनको जन मअं का घ परगट नीच
रत जानीयो अप ऊच रतवरनतं हयेरनी अत ऊच — २ मरर
रत हरनकरन भूति नीच नर नारीनो जो अं थ — चचमा ४
पौ ऊचरे जानीत अप ऊचरतवरनतं जः सीजु न गेमी
र मव नंकुश तःसो चाहः तो अस्व होनें सरीर कौकसार
यो ऊचरे अपरुचरतन — 2
नतं) दोहरा जहत्रिया को र त रुच न हो पीयाविसे — न४
जो नावि नन हुद त नहोये जु घ्र व पासकल तब
आदि दोहरा अन रुच त या पुरुव हूति लः कहः को
क येह नाइ जैसः रोजी नीब को अंरव मुंद पीजा य १०

दोहरा। जोजनज्ञानःकोकपढकरःसोजतनबिचार
अतसुखउपजःतरनकुंरतरचमानःनारअमन
कामवाम नःनवरतनंदोहरा। मःनवमकेदिसनरससदा
अंगअंग सोवतमदनजगायकःपीयाविलसःश्रियाल
होर२४ जःपाधरीछंद। पढ़वावसःसंतकामनहांबरैअ
देतरतरचैवामा रतीयाद्विगचुंबनकरतकेनवि
तियामाहिदेतश्रमधरदंत जबचोपकामग्रावः
कपोलतवचुंबनखंडनकरकेलोल। गीवापां
चौ छठकाखमःनभुहठउरकहिउनरवदाननःा
सातोंकामवरदनकरियोरोजतहुसतग्राइनिश्चम
नोजअग्रैमनमघहीवयेविचारवरमरदन

श्री करतले तारा नौमी नाभ द संकट हिर्दोये क
रमरदन कीजत अंग दोये एकादसी मन नासि कामदेव
जंघ गनिवास ताहा मदन धाम के मलह नास।
तादिन जो कीजः बहु परसंग तो द्वै तब है तरनी
अंग।। दुआदसी जंघ आवः अनंग। र तरवन त्रयो
दसी गुलफ संग। चौदस कौ चरन करह निवास 3
अमावास पग अंगुष्ट वास। कर मरदन करताल तार
येह बिध रुच उपजावः विचार दं अमावस पड़वा बिमल चादते
पग अंगुष्ट अंग गजह मर्ज तरियो रत रवन चढत
जात तहू अंग) हंसन पहु कौ श्री दई: प्रथ विवसुक
लाजान याहू कौ ते थिन नि रख अंग विद्या पहचान
मंगला छंद पदै मन न पढ़वा दूज पाचों चौथ चाहू:

कामदे गुलफ जेठा

भोग चित्रनी आठों छठ दसमी द्वादसी संजोग ।
संखनी औ मात तीज तेरो दसी मैदस द हूत अनं जानेयस भाव २
ग हस्तनी पुन्यो नोमी चौदस बचस पियार च रैवावर
रातको ४ दोहरा । निस विभ्रम तीपद मनी जानचित्रनी काम ५५८७
रातको काम । विभ्रम तरच संखनी हस्तनी ... ७६३२५
त पचम खंड समापतं श्री जैन कोम बास ... राम
कलपद्ध ॥ ... कम्मपत्र

द्विव

कसन उत्रा	सुकल चडा	
१	२५	मांगतसकरदांन
२	२४	नेवचुंबन
३	२३	अधर चुंबनखंडन

१

४	१२	कपोल चुंबन खंडन
५	११	कंठ मरदन खंडन
६	१०	कांख मरदन करना
७	९	कुचा मरदन
८	८	हृदा [illegible] मरदा ते [illegible]
९	७	नाभी मरदन
१०	६	कटी मरदन
११	५	जोनि बद्ध [illegible] संग
१२	४	जांघ मरदन खंडन
१३	३	पद गुलफ [illegible]
१४	२	चरनं मरदन
१५	२	पद अंगुष्ठ

अथ रोमसातनविधऔषधे॥ चूनो गोदंती हरताल
हरतना मं कदलीको डांडू करः तनैं परलेप कु मगपरः
बाल ताहूं न होये वाल को नाम। चूनासाथ कद
लीको रस ठारः पीस बार लेप सबारः। दूर होक
च संक नक करे कोकसार की बिधसुन ... ली जः

अथ स्त्रीवःसवरनन्नं दोहरा। केलि आं
गोरी सम ऊकः बालातरतीजान ॥ प्रौ
ढा व्रिधा ... मनीये खरबैस बरवान

अथ कनितयाबैसबरनन्नं। अड़ल) सात बर
स पर यंत सो कनिष्टां जानिये। तासों काम
कलोलनः कबहुं ठानीये बाल पन को ख्ये
ल सदा मन मां ... कछू लोल खे बिला

८	१	६
३	५	७
४	९	२

८

हार नमननमः आवई। अथ गौरीवः ववरननं। आठ
वरसते गौरी तेरह केतले चाहः चतुर खिलौना
सुंदर अतभले। जो नर विलसै ताहि सु बहु सुख पा
वई। फुनि हाहजी ताको आधिक विलासन कबहु भा
वई। अथ बालावः ववरननं। अरल बाला तेरस आदि
सो बीस केतले चाहः पान पुंगी सुगंधि रंगी अतभले।
ताको काम लोल हेत जो लावई प्रीत बढे कुंवोर माह
सुख पावई। अथ तरुणीवः ववरननं। अरल बरस
तीस परयंत सो तरुनी कहावई। भूखन चीर अनूप
ताहू अत भावई। तासों काम लोल हेत जो लावई बात
अनेक सों मन तहिं रजावई
पुरन प्रेम अनंद परसपर पावई। अथ प्रौढा

परिक्षाता को आदि कसंगा रसदा मनभावही ४

5.

कसवोई ६

सुगंधि सुंदर ६

वसन शरीर ३

प्रौरन २

वैसबरननं प्रड्ल॥ चालीसलग परवानस प्रौढा। [illegible]नी चाहूं कुछ [illegible] प्रेमत ज काम नीजां। सों र काम कलोल प्रीति त लावई भांत अने क सो काम न नाहि रजा वई ६ अथ वधाव: सब रननं अरल॥ पुन वधा तया होई सबन सुन ली जी पै तासों काम कलोल न कबहूं की जीये

परिकम्प नीवः सन आ पुजि [illegible] नीयें। भी मन थोरी प्रीत अधिक कर मानीयै दोहरा॥ पुरुषन तेड्गनी कुचाहें [illegible] खट गनहो ये मदन अ ग नलाजद: सुविय यहविध सम कोये २ फुनबेसर छंद बिक्वा [illegible] निसेगर ह जु कामिन। सदो मात

वेवचारनीजोनारी

[illegible] सहज भावनके लच्छन [illegible]

ग्रह राहु है जू मान न वत्र पुरषन मेहीनारीरहूः ५
भाजः सील कोक न्पू कहूः अथ विरकतं लछन
बरनन् छंद ॥ छत रबेग न देत कछू पीया के मुख ओ
रन बाम नि हारः। पोढत पीठ दिये पीया के संग चुंब
नते मुख पोछै डारः। जो पती के कौ आवत प्रीतम
दुरजन सो आपनः मनधारः। लछन ये जिन प्रेम
तजो पीया दहू न होये सुभेद विचारः। अथ अनुरा
गवती विया लछन बरननं छंद छंद ॥ द्रिगन्नर
निरखत न लजः जहस्ति कछु अंग दिखावत। खिन
खिन देत उघार खिन कमेंछुं बदन दुरावत। चल
तथकत इः रहत बरन अंतर नस हारती कझूटा छ
गहूनासांरः

जुलफ चलत

मुख छंद तप र गट लटी छुटी सुमारत। पलव चरन

धर रोदन्ती बसुधा लखन कपी यति हारक: कुच कसत। अनुरा

गवंती यह विधि जो वति प्रिति रीति ही अधिकरति ६

खुसी (दोहरा) उ ऊ क उ ऊ क जौंकतानाय ननिरखित मुसु

कात। [illegible] आवात निपट निज [illegible] लतअ

अधिकमती [illegible] अतिहास केहे [illegible] तातरनेस कलअलन्दतास ५

कामवती (छपय छंद) चित्त करगहे उरोज करत कुच कुचा

मरदन नारी। अगअंग [illegible] परहू [illegible] हृथ

पृथरपृथर सोगहुत४ नारी। सखी अकमें [illegible] तव चटकावत। दोर [illegible]

औदीर२ पौर पहस्याये हैस चितवति चखचलावत ग्रीया

अतिजंभात उचार चित कबहु न छिनु लज्जा करत।

जभार टूटता२ ऊ

यं परखपर पीयाबात [illegible] निपट निज [illegible] अधिक [illegible]

[illegible] अतिहास ३=३३ [illegible]

कूपड ३कः

अंचल उरोज रूं पहिन हूं सुमन न मनोहू विचरति । २ इतिकोकसार

भाषानारी पृच्छा व ह मोपवंड ५८ अथ कामवतीको पचदंच । जो जो बन मः कं घबी

छरियो चिरकाल हू पहू पजौं तर निदेत जलज नहू

सुधु मालहू । कामनभे परसूत मास हूं वैः चीतत ते काम चाहे

जानैभोगनन वर्णि बहु प्रीति सा सो विरह वलुनसिग्र पत वालकमे

तातन अथ सुवतीत यावरनन ।। नैन मनावत सिथ ...मीनेविध

लतन केहूं सो के पत वैन अतिप्रकुल ... छुड़ियावाहूः दोहा ६

रहन जबतीय मः नै अथ नारीदूरवनसमुद्रीक कायल ।

दोहरा । निज कूर वोलेः अधिक तामस अतमहूरूहा ... सोहरा ६

भरदकोक ३ सकहूकोकगुन तरन के सकल कला न तिरस ।। कुमाकरही हूरव

दोहरा । जाकी जुग मौंहूं जुरी औसी जु वति जो

होइ कहूकोक बहु कुटिल मन तसु पति आवन

काम

कोयै १ दोहरा तनको पत मारग चलत चेरव बिंगल वागी

छतीवाले २ ७ र बार \ जा हां तहां बहू देखीऔ बिमचारन सोनार ३ जांघपीडरी

दोहरा तरवरसरत बिहूंग सुभ जहू नछत्र कोनाम
परगट जगत मः देखीऔ बिबचारन वहू बा मथ \
कामनल जा परहू रः बैठः सुन मुख दुआर ग्रह
अजार भाव न हीयेल छन बिबचार\ बिंब को मूछ
परबाल जहू सुभरकामको धाम। परजिन घरसः
मधुपग होय सो बिधवा मा सो जाको पग प्रगट
घर एकोजो बठ होये। बिआहत हि पती को हनः
मूलन बिआहे को दीर्घ हो येप्र नाम को प्रत
किताते हीन ता को पती जीवत रहूः बरखदो
ये कः तीन दोहरा) जाकी नाम गंभीर बहसव

Margin notes (left): जरखी; मालक ६; जाला सी सुभ छपर परगट होय कहै चु शा मथसत परसे मथसग होय सुरप वामथ जंघसु छपरवार जहू सुभरका मको धामसमनप्र ते मधपग होय सु विधवामामट

Margin notes (right): ठोईः ६; सपेद; पैरपस; नामसंः

कौ १२ बरगी

न होई जिम सोपगनि अः होई द्रीदरनी जवपिसं ८८
गरः नू पा१० छु चावतीपनिंद्रावतीसोगवतीसी
भाम उच बं तर सनाकरन कबहून पावःदाम स्थाय ३
अतिलघु अति हि बिलासंत न सोलं गर अतिहोये
तावियाको आपना एक भेत नादीजो को येइये
कपीनहूः छीन कुचअं अधिक हीनका छु अ मालवडा
गबात कहत जहूतरन के फूलः गीव उ तं गा छबीका ६
तीपर शेम होये सभ गात पुर चलःचाल उ ताल) अ ओदी
तालका तदुरबल अति छीन तनसोभ न पाव नवाल ॥ २५
दोहरा जाके रूप कपोल दृ ऋः बात कहत हृअे जाय।
तात मात बाचन के निः श्वः जीव नाही) अ घर पानि दोहटद्राध
ताल रसनदासंन उपरसीयाम उच पंसे तीर घ अ
दोट दुगेकपोल दंत कोद२

पोलपाइकी कामनी दो पुरष को स्वाय भला चू रजाने नहीं तें जे के घर जाय १० स्वट कर पल को ति कामनी करै प्रथ ब्रत्र प्राध

(प्रिकरांड द शब्दु नी नाम) दोहरा जा के प्र चर विसा सोतियाद

ल अ्रत बोलत सदा कु बैन ये नारी न बिना हिये। नि चितिरहत

रख नि पुरष तें न नैन। प्रथ परगट हेत वर न नं (कु नितयधा

लीया) जो न हीं जाने। प्रीत गत रहे मलिन जो नित। पति पि पिक्षग्रह

आरो नाहीं न करः भ्रम रार्खः अति चित) भ्रम राखः चित ब साध१८

चन मलद्रष्ठ सुनावः। कठन कपन अति होये आपन हीं

खाये खवावः) सो गवती सी रहः बात नहि मुदित बखानः

प्रीत हूर न अत होये प त गति सो न हीं जानै दोहरा।

चत३८ पीय नागर मुरखविया तीया नागर पीया कूर मन न ब

चहि तू बित दूर कीन। हेत प्रीत रुचदूर है मूरख से गा

रव रनन रूपयाछ्य दाः/त लि रमक तन व सन चारु परि मल

तन धारत। पानन आनैन अर रा म रा गन ति उचार

खात मुख राग वचन छिनं छिने

तउ [illegible] तीन [illegible] लाल हांस ब रनी [illegible] मुख भी खत । बैठ पुहुंच के बीच
मन उचार सो बो दूत के स लांबे प्रत राखत । आनंद [illegible] मनसभकारा खत
ता चित व ढत यह बिध जो कामी रहत । मोहत सब मन
कामनी कछू उपाये यह बिध कहत [illegible] दूती वर
ननं । सोरठा । भूपत मंत्री हीन दूती विन । कामी ही पुरखाइं
न बिन ते रहां तीन कोक शास्त्र इम उचरत । अथ दूती
जात वरननं भुजंगप्रयात छंद । मलनी गवाल नटी सखी
औ चतेरी । नटी नायनी धोबनी धांय चेरी । सन्या दाई
सनी बाढनी औ कलोरी । तंबोलनी दूत काये बचारी । तं कुजड़ि
दोहा । सिवा बीज लोहा कनक तांबा हरति यो जो होई । कमारी
धात चार रा धात कर खात रस क सब कोई ॥ २ ॥ दोहरा
पय [illegible] ताम्र [illegible] रस [illegible] ल मुसली स्याम । मुंडी मधु
पुसजंघ [illegible] लं [illegible] चीअ में राम ॥ ३ ॥ दोहरा संखा

[illegible] संसत [illegible]

राजनी

पीसकः

वैंगनर होली गुड़ उड़द गेहूं पीं पी[illegible] ले खांह । कौंच बीजा से

पत्मलः धा मेंटा अरु महूले ठौं नीहै ३ वीरस । तन मरद न

पात तिल तेल को पर मैं ल । पान गलो ये ४ औ जो कुछ कछु बोल

समै बिला चात सैन मा हो ई अपवश बाजी करन प्रोच्य

की) रोहु रा । धात करन अत बल धरन मो हुन भुजे

कोये) पयसमान तिहुं लोक मा औ खर और न कोये ।५

रत के समे जो पय पीवै घटः न बल तहू अंग । चित हित

हन रुचरत की मीटः चौगन बढः अनंग ।६ नाराय णी

छंद । पुरुखन घृत रमू मरैं न एक ठौर पाई यः । म

गाये माल कं गाणी औ घि उ मः मजाई ये । टांक रा

क पर मान जान नि ता प रा तै खाई ये सो का मंकि लो ल तें नी ८

अनंद मंदं सो पाई यः ।१ अथ समान बाजीकरनं

आसगंध जो दूध सों प्राटं कर रु होय जो कछु पीर न स्मर्थ बल बाज जो होय ८

मोल का गंलुगान के चात मेधरै व जाय मह को क बल ना घटः प्रात समें जो मि

यं ५

दोहरा॥ इस बंद मुंडी जाये फल जावे जी अ. हू फेन
॥ बिजीया अ जवाये ए दू घी साप ३ थं व न मै न॥२॥ १३
॥ अथ बसेख थं ब न बर न नं॥ छपय छंद॥ सस केसर
दृग लौंग रा मि ३ जा ती फल जान त। बेद ऊ जे अ हू फे
न ञेज द्व: ति ग मद ग्रान तै॥ स कल पीस ये क ठो
र सहत [illegible] वीवै ना [illegible] वा व तर हृदो के टांक पर
मान जाल जीअ व टी सं धा पाक पव अ नंद प्रीत पान
न मिल: बटी एक मं चत पुर रख। त ब लग म नोज मुच:
न ही ज ब लग मन रव: न अ मल रस॥ सोरठा॥ चतर
गं ज अ हू फैन पहः टांक हरवल भार हः य क त हो
ये मैन जिउ वार ऋतु सरद मः॥ अथ अब द मनोद क
का मेसर। दोहरा॥ अस गंध गंगेर न पाय छड
अ ज मोद [illegible] नंद हर ड ब है [illegible] बकार स कं
सराली

[illegible]

दोहरा ।। सिंवलछाल कचूर सुम औरमूसली शया
ना नो घा च नीयां मोचरस गेरा पीपल खुमि राम ।
दोहरा ।। मीरचां कायफल गोखरू पीपल पञजआन
सतावर ४ सातमूल ताली सातजावि जेसार फुनजान । दोहरा ।। लोद्ध
सूके वीज मूलार के जीरा सेत असेत । चीता मइंगी गध्या
सहत कवच वीजफुन तेत ।। दोहरा ।। मद्रूरे की
गटेकौ पंकज गटा नवल संघारे जान । कुलथीको कडासिं कलती
ना२ हिं पुन नाग केसरो जान ।। दोहरा ।। पोहुकरमूल
सतावरी औषद औनतालीस । टांकटांक सभ आनकं
वसन छानीयें पीस । दोहरा ।। लौंग छुहारा जा
खोपा २ ये फल गिरीचरो जी जान । दाखवदार चीनी तग
रसरयेलाची ल घआन । दोहरा ।। इसबंद

=खरी मांग

जवंतरी ललत टांक टांक लेआउ ॥ येस मओखद मे
लके: नागर नित घर तीखाये ॥ चौपै ॥ पांचसेर गो
दूध मंगाय ॥ निरजल भाजन मः अवटाये ॥ बसन
बांध पय माहि छुटकाये ॥ मींगी अधसेर लै आवा
धूरल ॥ दधसमान जो ओखध सकल निहारी यः ॥
वेजीया वसन समेत नकारक उरीयः ॥ ओखद आस
गेद मूद अबेद रलाइये ॥ पावक मंदहूं मंद जार
येकाइयः ॥ पः पय महि जब सूकै चारूसम होयजा
यः लौं ग आदि चुरन सकल तामहि दे हू रलाइ फुन
बिब कर कर सकल मिल मोदक करो हू पचास ॥ सब
ल करः नित खाये जो होइ छीन तन जास ॥ दोहरा
दाहात करन ग्रत बल धरन गहि जमन सजनीर

॥

अ गनउ पावन दुखहरन मोदक सुखद। शरीर
अपरत अतोर वरनतं॥ फुरवेसर छेद। बिनाक तुल
कपड़ेमाल बीजसोप कुलः द्वः टक पीपर हारीये। लपटायेक:
पेटकरउ पट नवल ता मः सकल मुदसवारीये। फुन मधपुव
काये पीपलकाठ छांहि सकाईये। समदार चौली
परीद चारलेः फटक ठी प्रथर लाईये। औरवदसपूर
नकरसचूर न जीन अंबर छानीयः। फुनअरप
टंकपर मान मध सऊ बरी सुंदर रव नाखिः।रन
आदमुख जल (मलः ताकालिंगलेप सुकीजीये॥
(निज मनहू प्रत आनंद उपजः तैयन मनसु
खदीजीयः। अथ नारीदरवनविधः॥ दोहरा
कंचन प्रर बिब गुंजन राउरे गल ताके सेगा।र
[illegible] स्याम दो रती

गुंजातातापान साय स्वागस्वावे

वनखण्डाव:रवनको निस्च द्व:स्र नंग। सोरठा
ती२ । दरव: नज बल गनार तबल गसुख पाव: नहीं॥
ली जो चतुर विचार एकरीत नरभाम को दोह
कीड़ा रा॥ कीट होई येकसरद रुत वनम हः ताको वास।
फेनस्र घक मुखते नजः तिण पर ताको वास।
कीटे फुरो ली फेन म हः डारः कीट न कार। वेया
गौग
ल बेल संग री जीयै द्रवः मदन जल नार॥ छपल पान
छव। प्रथमः कामकलोल नार संग बहु चिर की
जे तः मदन मदन ते काढ़ बहुर मदना कुशली
जत। खिन ऊपर: [illegible] खिन तलः चतर स्थत चप
ल चलावत। ऊपर तलः चढ़ाये खिन को भी तर ब
ठाबत। जौ तीय न वार येह विध जतन को पाय

दृथलेकर जंघपकड़५

अनत कामी करतौ काम न मनोज निरुद्ध वत
कोक शास्त्र मउचरः ॥ दोहरा ॥ नार दर व्रतनि
हार कै पुरखदर वः तत काल दै दिस अतल
चवढः मुदत होय बरबाल ॥ दोहरा ॥ जो काम
को मद न जल निकट पहुचियो होये । तौ ती
या एक जतन करः जानत च न जो कोये ॥ सोरठा ॥
काम न अपने पानि सहरावैः पी अ जंघ जु गाज
तन सुयह विधि यौं रमणि नार द्रवावः रवन कहु
सोरठा ॥ ज तन कर तनी चैं नःहत्रि पत नत्ता कोप्त
र न हित न होये दहु बीच करः सुभसपू ली कर
न । अजात तीरंद ॥ क नंच अरपच चंबेली पयसे

सवागा

गलौंयः। मनसल अरकुठ पीपलरा कडु कीजीयः
समसमान कर पीस तेल ता मः लः अबः। म्रान कुटता
कोसु खीन खान नी छनावः। सकल तेल छनाय
कै राखवः सिसी माहि। जब लिंग लै लेपीयः द्रीढ
कठोर होय जाये। बेडाछंद। सनत छलीरा पी
सकः सम आनियः अतछुछन कर पीस बसनमा
खानियः मालकंगनी तेल येकसम [illegible] वानीयः। म
दनंकुश गुर होये। लेप जो ठानीअः। अरल। नरियो
लो हृदसटोंक सुंठ सम लीजीयः मिसरी उनः सम
न सो चुरन कीजीयः। दिवस ईकीस प्रात छठ जोजन
खावई। परः हवीजनः वेग धात नहजाई अथ प्र
मेहविधीवरननं। दोहरा। महहलेठीदार मकली 13

श्वेत कथ सम खंड दिन दस चूरन कर: नास: रोग वि
हूं ठा दोहरा ॥ बही लायेची खंड सम चुरन र कर
दुःधन्नावल ३ कलेया भोजन खाव हू पथसो कहा कर: परमेह
मुत्रकृच्छ तथा परमेह को दोहरा ॥ एला बांसा गोख
रू महूरे ठी जो मलाये पीपल हरड़: रेणाका अस
पाषान भेद
मभेद सम पाय ॥ क्वाथ जो कर कः पी जीय सिला
जित मिसरी घाल मुत्रकृच्छ अर पथरी पुन प्रमे
ह टाल दोहरा ॥ एला लघु पीपल सिलजित अस
मभेद सम आन पुन पीस छान कः पुरी वा घी य:
द्वः द्वः टांक परमान ॥ पुन प्रात सम तंदल के जल
सो सीत सु घर न होय खाये ॥ अत सुख हो जाये ॥ दुख
तन ते कहत आनंद उ पाये ॥ दोहरा ॥ मदन मदनते

२७

रतसमः चलतसेतवहु बार। हरखनउपजः पुरखाचे
त। नहत सुखपावः नार। वहुतहुदा फलखजूर
कदली ~~फलसाई वरी~~ आनीयः। तांते दूनेतोलम
खाने आनीयः ती नों पीसदूध सोपीवे कोमनी। पहिला
पाव प्रमे बनाय सो आहि भाननी। कदलीफलपर प
कोखेडम घ लायकः। प्रातसाततदिन मों खदसमकरि
खाईयः। जाहै ताको रोग प्रघ के सुखपाईयः। अथ
केश विधिवरननं। वारनहि ... को बारकेः मह
खीपःयकेसंग। कचलां वेदनं वूढः मेधि केवारउ
तंगन चौदै प्रथम बालसमदूरकरावै। उपरतेल
अरंडको लाये। कुचला पीस लायकर नीर कवकुन
होये सो बालसरीर। अथपोहपनवार नविधि
सोरठा। बांसचीढ के पातसम करपीसःवारसौ। पर
...

मेदी + बांस कौ पके पात सम

मुदा पीव प्रात पो हूप न वार न हो इ (तिस) ३ बटन विध

दोहरा १ हर द गो खरू सों ठ (स में [illegible] मोथा सरसों जा

केसर २३ ना १ कासमीरा का पूर लघु टांक टांक सब आन १ दो

हरा १ चार टांक चंदन कपूर न सम कसूम तहडार १

न वल चरी जी टंक दस पीसो स [illegible] सबा र २ स व चु

रन कर तेल मिल करै : उपट ना को ३ विमल रूप

राजेत तरुन क मेल बदेन [illegible] होये ३ अथ जोन वत

ना लैया [illegible] एकन जो न मनो मिर्द बारज एकन कटि तोल ५

[illegible] होत करारी येकन की कछु गोरै सना सम एक

नकी [illegible] गांठ गंठारी एकन की जल हीन व राज त

एकन की [illegible] तमैं : पनहारी कोमल होये नहो

येसो [illegible] प्रीतम को मन मोहन हारी दोहरा

[illegible]

लवी ४

नारी एक व रंग में नास कासू वस मान। सुरत समद ताकौ
मिलः कामी रस क सुजान २ दोहरा रति रुच ० पजः
नार को कामी मिलै जो काये। रुच व ढाइ जो रत करै
तौ रत रुचे अति होय ३ नाडी एक व रंग ना सम नारन
मः होई ते अत लंब म कोस तल ह दीते हि मन सज के होत। ४
दोहरा अति तल स की सिखापर गट पुरख के छंद। तुल्य होवे तैसी धरन ६
ति मन ता के पुन होत हः जानः को पत कंद ५ दोहरा एक
तपरः जो जो न ते बीरज द्रवः ज्ञ नार। सो सब वा मन ५१५८३६७
को सवः कह को कनिर धार ६ दोहरा जब लग बी
रज पूरख को परत न छीद्र म झार। तब लग नि
ह चः जानियः गरभ धरः न ही नार ८ दोहरा म
द नो कुस जो नार को तासो लाग जाये। द्रवत बेग ही
धरन ९
ही ... ये

15

कामनी भागत है: अकेलायें। मदनांकुस जो नारु केनें
लागत तासूं जायें। चार जाम जोरत करैं: तौनां नार
अध्यायें ॥ दोहरा ॥ मदनांकुस जिउं जिउं लगत तिउं ति
उं बढे: अनेद। बढ़ै: दरप कंद्रप को मिटे: कामत
न दुंद ॥ अथ पद मनी जून बरननं ॥ दोहरा ॥ मिदु, अ
थोड़े होन ५ लोम निरजल औरा ॥ भगसुत चरन समान कमल
बास बीरज द्रव: जून पदमनी जान ॥ अथ चित्रनी जून
बरननं। दोहरा ॥ अतं बरतुल कोमल विमल है
मलते रहत है
बोल नाहोये ऊन तापर बाल। द्रवत बेग मधगंध सम जो नचित्र
नी बाल ३ अथ संखनी जोन बरननं दोहरा ॥ बहु
कठोर दीरघ अधिक कटछाती पर बाल। अ
नें बीर
तुल गोल

कजमार   सताबीनी छूटा १

तद्ध रंगे घ संखनी मदन द्रवा न हूंोद्रतां ... लह अथ हसनी छूनवरननं दोहरा कवन छूटकी मरवाल बहु मगमरहू खीस्वर पैंदिन दवः सो गज मंद गंघ सम हसतन अतरस लीन दोहरा द्रवावेज र त रंसैकरै पद्म मनि चिंबन बाल एक संखनीस्वर हसतनी द्रवेन हीवतालः अथमद नांकपरमान दोहरा मदनांकुस जहू पुरष को आछो होये वि साल द्रिढ कठोर अतहोये नहिं द्रवंतसुरत उताल ॥२॥ जाको सूछम अतहै लघुनहू विपतःत हूनार अतहोयेबि मचारनी लीजःच चावि चार३ दोहरा जाको सुमार कठोर बहु नहीं दीरघ लघु होये

छूट:हू: घोडा।

मदहसकेसुरज तनीभग ३

चंद्रसवा गेतजैसेता

चंद्र कैता गाः

सताई

१८

16

मंद्र हं ... करड़ ... तहोतहै

मदनांकुसकेसी सपर प्रघटप्रवके ... प्रगरजातियेभेद १ २ ३ ४

ब्रथ मेलमा गमतरूप कोमुरे नवा सोका तथा अरैरूतर का कोपते जरतेता को
तास मेउ तमनर नहीं जानत च च जो कोये॥ दोहरा
नर नंकुश के सिरसु भरहो ये सुनंन तें छ्राम॥ द्रव: बे
गमगपरसते त पत न पाव: भीम॥ अथ पुंगत्रीया
बरननं॥ दोहरा॥ कोख जंघ उर उरज कटि पों
च अंगन खसानं॥ नेत्र कपोल अधर होठ पुन चुंब
न परसपर मान॥ दोहरा॥ अधर कपोल न सीस
उर पान नअर नेना ह॥ सात अंग मरदन कर:
जोरत समये मान॥ अथ कामकोरे तिलवरननं॥
दोहरा॥ उत्पत कामकलोल कै सुनो रस क
सब कोये॥ ये बलास त वहीं बन: त्रीया बचि त्रजो
होये॥ चौपेरा॥ येक रैन कीजत रतहोये॥ ला

अधर कपोल न कुच भुजा कु ... जोना कारव

गली मान २॥ अथ द्वे ३ नव

२॰

जेतं रसिक चव जो कोये॥ जोवन कहे: घट: बल:
ताहो॥ दो बिन जीयानें होय अंग सें॥ अथ सेजा
बरननो दोहरा बिमल ठोर पर बिमल कु सुमन सुध कोठे
सो वास। कंठ विमल गायन न सोवत बिमल सेजके संपेद
वास॥ दोहरा॥ पान लवंग ये ला जगल जाती फल
घन सार। जवं जी सुगंध वालु यह विध सेज सवार॥
नागर निरमल वसन तन पुर पर मल बहु लाई सगंद
बदन पान राजत प्र घर सेजा बैठे आये॥ दोहरा
जबं कामन गज गामनी नवं सत सजें सिंगार। सोलां सिंगार
बैठे सुन मुख आयं कर राजत रूप अपार॥ सोरठा
पाये करो सिस दोये भूषन उर जो ठानिये॥ प्रत
तकर जान हू: सोये ~~कोकौं सोरे~~ (छवरे)॥ अथ लिंगन बरन
कपूर खस
१४ ... CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham
... माल। जल चुरकों प्रहै तहां वे सम भर दन पान सहराय सब अंग तन आलिंगन पर ...

17

नं दोहरा। नाम कंध करबांमैं धरि॥ वठावत पीयागोद। पानखवावत पतकर आलिंगन आमोद॥१॥ दोहरा। तरन जंघ पतीजे घमनंसी मधे हृ पियावत ले तासु। सोलिंगन ऊदत कहीउपजः प्रमबलास॥ पतिकट लपटैः एक पग दु तीया जंघ परजान। परम पीया लावः ऊर जप्रेम आलिंगन मान॥ दोहरा पति कट लपटः ति घ चरन नरह अंग गडुरवकें द॥ मुखचुंबन मरदनस्तन आलिंगन आनंद। दोहरा। त्रियाबः ठनपीया जंघपर बामकंद कर बांधि। तब कीजत नीवी मुकत आलिंगन रुचि नाम। पंचम चतर जो कामनी पति को आसन प्रमन पंचतर रीति करै तव आनंद काम द्विधरै ये पांचौं आलींगन नाम इनसे सुख पावैं नरवाम॥ २८॥

जंघ ख धारि॥३

खवे

देत। प्रतश्रनंदच्चेत उपजः। बठः। चिवद्मुते

सीहोयकर २ । प्रथम बनोंद जोगतनश्रबनंग तूरंगमछंद। पी

स पोढ कः पाये पसार परः। जुगजे घ दौ कर स्वै

च घरः। पीय बैठ भुजा। गहु केल गचः। कवि प्र

सजोग बनो यय च। प्रथमरतजनग बरन नोतरं

न छंद। भुज उपर मी ते के पाये धरः। पीया चः। ठ भुजा

गहु केल करः। रत नाम कहूं ओ ये ह श्रास नको। अं

त प्रत बनोंद प्रकासनके। प्रथम बनोंद कआसन

बरनतं। तुरंगम छंद। काट उपर नारी के पाये च

रः। पीया बैठ भुजा गहु केल करः। मदनोद न जान

ग्रै हो प्रेरः। धरि कै। रति हो तहो द्रिढ़ता कर कः। प्रथ

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

पगद्वै भुज धरके प्रथमनमरक हो नगठ एके गहु परस्पर दैन

प्रंगढ्व जान हैं। इद्व श्रासन नाम जगः जानस जान हैं। २

(left margin:) सीहोयकर २ | तियावैव पाल,प्राप करेजुग जंघदोक रमीचः धरः पीया वैठभुजा गहुकेल करः कवि श्रासन जोगप्र नंदपछै | कामन वेकदली पगद्वै भुज

(right margin:) ५५४५५७३ ७५७३७५५ ३५१ ७७३ ७७३७५५ ७७३ ७७३ ७७३ ७७३ ७७३ ७७३ ७७३ १२

चंद्रनाआसन। छंद ३ कामनके कदली पग द्वौ भुज धारकः। पुन कामी करः कलोल आलिंगन कः। गहे परसपर अंग में न सुख जान हीं। ई ह्वासन ये ह आसन नामसो जानही ४ अपलालस आसन नाम छंद

४ कामन के कदली पग द्वः कटि पर धार कः। कामी करः कलोल सरूप निहार कः। गहः परसपर अंग तः न सुख जा नहीं लालस आसन नाम सखी सब जान हीं ५ अथ व पीत आसन वरननं तरंग म छंद ॥ पीआ पाये पसार कः हृठ परव चढ उपर तामन बलास करः। विपत कहये येह आसन को। सत पत वनोद बलासन को ६ अथ उच आसन वरननं। तरंग छंद ६ पी यपी

हकै नारि उरोज गहै। तरनी पति ऊपर बैठ रहै।
निज कामन काम कलोल करै। कवि आसन उच्चसो
नाम कहै ॥१॥ अथ उच्चप्रोस्थतआसनवरननं। पाध
री छंद॥ बाम के धम हू पुरष बाम कर वाह छै
छाजत। पीन तनक के पास तरनि के चरन विराज
त। गहै सेज दृढु पान करत रत मतहि तकाम ना॥
अथ तिर्यगासनवरननं। चौपै॥ कामन पीठ पा
य पसारै। पग उलटि गहै निज नारि। केथ चाहै
कामन के पांये तिर्यक आसन बरनै गुन गावै॥ अथ पन
गआसनवरननं। तरंगम छंद॥ पन पीठ तरे
जगहो ई रहै। पीय ऊपर पांन उरज गहै। लटक

टांप साय चूचा

ये मुखचुंबन के लकरः॥ मन गआसनरू प आनूप
परः॥ अथपरसपर आसन वरननं॥ चौपै॥ पीया
रे कर पा खुः रोकर हूः॥ दुः दुः बरन परसपर ग
हः॥ दंपत केलकरः मनि राम॥ आसनजान परस
पर नाम॥ अथ पत मल आसन वरननं॥ दोहरा॥
पीया ठाढो तीया कटि गहू॥ लीये अंक तर बाल।
कामीका मन जंघ मह आसन ये हू त माल॥ अथ
विमल आसन वरननं॥ दोहरा॥ खेब लाग ठाढो।
रवन बीये अलिंगन बाल। त पाउ छाये पीय मु
ज लई आसन विमल बिसाल॥ अथ उदुखपल आ
आसन वरननं तेर ग मह छंद॥ पीय पोठ कः जंघ

ऊंचे

सुउ मे: करः । करकनन के यह सीस धरः । पीय बैठ

मुहः कच के लकचैः । सुखपलव नाम अनंदरचेः

। अथ नल बल आसन वरनंतेथवहड़ा छंद ॥ भा

मन के हुः पाये भुजा जुग धारकः । कामी करः

कलोल जु भांव पसार कः । पांयन को अत हू बलै

नि अ अति यें नाम नाबल आसन ये हसो जानि

यें । अथ कुरत आसन वरनंनं फूल वेसर छंद ॥

तीय के चरन कंघ पर धरः । कट कर गहहक ग

अनुसरः । सुरत अंत आसन को नाम । याते जी

याबिद्र वः काम ॥ फूल बेसर छंद ॥ येखो इस आसन २०

कर गावः । तब कामी मन में हद्र भावः । छिन एक र

तः पौढ पर नार । फुन उठ लेहु उछंः करवार ॥ दो

हरा ॥ पीया चोवः ताते उदक तर नी सीतल नो यो

कामरतन

यह दृष्टि को दृढ होइ॥ रह संकोच न होये॥२॥ दोहरा॥
वः उसेज पीय पान कर पान खाये अनंद। रहः नींद
मः मगन होये फंदः जुगल जुग फंद॥३॥ मंगला छंद
जोन गन सोवः नार संग तो घटः अंग मनोज॥ जो
बस न सोवः तीय साथ सो बढ़ः मन मथ ओज॥४॥
जो जुगल लोचन मुंद तर राखः छुटः ज बढ़ सिंचा
न॥ अत दृष्टि तीछन चपल इछन व छुटे जीरे पन
जाना॥ अथ उतान आसन अलसावि धी॥ दोहरा॥ रहः रैन ज
ब द्वः घटी तिमर होये कछु मंद॥ सोवत ही आस नक
रः॥ आलस होये अनंद॥ दोहरा॥ तरनी पौढः पी
ठ दे पुरख गहः कटि पान॥ सोवन ही अति रतक
रः आलस आसन जाना॥ अथ आदित आसन॥२

दोहरा। परमनुदापोढः पीठदः पतिबःठःरतठा।
कटकुच कामनके गहः प्रादित प्रासन प्राय२ अथ
संकोन आसन। तरंगमछंद ॥ तरे नी निजपा
य पसोर परः पी तोपर बःठ कलोल करः) जुग
पीन पीयो घर पान गहः। यह नाम अतेदसेको च
कहः ३ अथ सयन आसनवरनन। छंद ॥ तीया
द छन पाउ पसर पीय लेकर तीयकं घ घरः।
पति पान गहः कुच केल मचः सपल आसन रूप
अनेदरचः४ अथ गेंद कआसन वरननं। वहुछंद
। तरनी चरन धर भुजन परंस पर अंग धरै। उ
परसेंदुरी वीप गवै ठउ चै होय केल करा। कामन
उपर केत कड़ कीजीये) गेंद क आसनंद
नाम

सरवनसु नलीने। ये पांचों आसन करः तब ह
द्रवःबिवकाम। रोमरोम सुख उपजः अतहि
त मानःबां ध्य॥ अथ आलिंगन सूचका पाघरी छंद
। आमोद कुंदित फुन परेम जान। आनंद कहो छवि सें
व खान। अलिंगन पांचों सुरत रासी। तसु कवि
अनेक दस प्रेम बांदी॥ अथ पथपत जोगतने आस
न। रूपे छंद॥ पथम जोगवते जानजान सहोदि
त अस्तन्न। जानु इंदर के भेद जान लाल सरस आसन
ज्ञान। जा नजा नेविपत जान चिंद्रासन बासन॥
पतीजानु। सच परोखतें आनंद जान। हित हर ने पर सपर जान
। आनंदात माला मनाला गति। सुखपल वासु महा
बली। अर सुरति। जुंति। आनंद। कहे सोइ सजा

सन रतिमन ली ॥ अथ दूती आ आसन सत्यारत्त बरनन

दो॰ आलस आदिन संकोच पुनि सिथल छनोछ देका
ना । पाचौं आसन दुतीय रति सूदो परबा नवे वो
हरा । पद छ खोड सबै पाँच कहे सगल मये विकै स । रति
ऊपरै जाव बहु सुख करन द्रावन रत येई सत चौरासी
आसन सगल [illegible] कोक सुख कंद । ता मन रेस ब अ
त कठन करेन जात आनंद होर ठा । ये आसन इक
बीस हर सुख उपजावन दुख हरन द्रावन रत केई स केल
करन अत सुगम [illegible] त चतुर दस खंड [illegible] अथ
आसन भेद चौपै मदनोदत संकोच बिरताल । मानत [illegible]
स्वपद [illegible] बाल । तीन बसेष है सुख समान । कहत सारंगा
आनंद जी आ जान अथ चतर मी आसन चौपै ॥ प

थन मद नोदं तात्र रम्राल ॥ सफुन मर नाल अविप्रीत४
ष्ठालालसा ॥५॥ पेदूखटहू: चत्रनीभुखदाय कोजान
तचत्र कोक रसनायेको ॥ अप सं खनी,आसनदोह
रा ॥ संखनहोंदाके जो गरत तीनों सुखद बखान ॥
सुरत,प्रेतरत हरसनीपरगट महोवल जान,३ ॥ ९१॥ ९४
,प्र घ पं चविध आसनवरननें दोहरा ॥ तिरजं जोजीवे
गहति ॥ विप्रीत रतात्र सिथता उसाथितजान ॥ कहें
जुआसनको कम: सकल पंचविध जान ॥ १ ॥ दोहरा
न्नगआसन प्रदित रत,प्रालस आसनजान ॥ तिर
जग आसन तीनहूंकहे जोकोकव खजं ॥ ३ ॥ प्रथर

कीन प्रेत

(त स्त्रासनबरननै) चौपै ।। मदनोदत, रति जोग वखा २६

नषेउंद कसिथल, महाबलजान। कुच पल व्रुसुर

तोंत, से कोच ना । नवरति जानजौ प्रलोचन। स्त्र जान

थनि प्रीत स्त्रासनबरननं दोहरा । रतुकारिस्तरुच

प्रौरवता अ्ररविप्रीत, आनंद । येह चारौ व प्रीत रति

तेनाता कहतकोकछ्रखकेद, अ्र पछान पितउहियत

विचवरननं दोहरा । ईद्र परसपरलालसहि

औ स्त्रासथितकरजान । एकतमालसिरनातप

नउसथितविचवैठानल । चौपै । रतरुचप्रौरव

त स्त्ररविप्रीतं । आलसहितकुनजीप्र पीर

ीत) आसन लिखे पंच तरुनि हित कहै। कोक
सार येह विध सोलहे॥ इति आसन विधान
पुष्कर नाम प्र॰) रतगवाव एहोय तिसकी
दारु) सिंवल के फूल छाँव: सकाव गो स्नरी ही
के बीजल: सकावुरो दोनों को पीस कै: जासे चा
र की फाकी लेणी रतके दिनवासी पाणी
नाल दिन चौदां। रतना आवः॥ दूर बंधेज
) केसर लोंग जवंतरी लयाव। जाती फल
अजमोद मलावः। संगसरी कुचला अर
दूर मल) सोंठ मूल सिंगरफ माजूफल।

कोक सार सुखरास चाहत चतर लनो चाहै कुरत

हो रति कज ... अथ कोक उत्पति वः प्रथम प्रनाव तथै कोक को जान तम
तहां स... हि लोक एक दि तौ वाद सहाय मुनी सतिन प्रगट

श्री छातेलाया

गुं द मसतकी समबचलाग। सङ्गु दरसोख थ्रोफूं फोम

पुनमाँगा। टोकटोकसमेलींजःचूर। दोमासे

कज्लूं
सगनाभी। कपूर। मेलसहतसों गुरकोकरः

टोकटोकपरमाजाधरः। पथ्य मसेर दूध को

खाये। पुनगुरकापुनपानचबाये। वहर भोग

नारीसोकरः मैथुकरतेवेघनऊरः। वारंवा

र भोगकोचाहु। वढःतेजो जी उजाहापहु

र एकवीरजथंबाये। दासीहोयेतरुन वल

जायः अथ्रुस जाककाञ्चालाज। नीलाथोथा स

रसाही २ जेजीफर ३ सरसाहूी २ मिरचांसरसा

हि २। पीपलोसरसाही २। चरायेतासरसाही २

हूलदसरसाही २ मलावसरसाही २ कथसरसा
ही २ नीबकेरससाघखरलकरनादिन ८
लो हे की कड़ाही बिच लोहे के दसते नाल रगड़ः गो
लीकरनीबेरबरावर कर : संध्या सवेरखाणी
सजाकजाये अथ लिंगलेप। बच कूठ गजपीपरः
असगंध वाला धोये मैंस मस्का मिसियुं लेप कर लिं
ग मुसला होये। अथ औखद प्रबंध कथन। प
थ्यमरस कवल को करःसंधं नहीं मखः मदन मा
द कन हींबच नीही एसाल मसताबर बहती
कोट बीज। उहं गनुसलयारी कमर केसलीज।
सप अैंजं मुंडीजु गल लाय बीह। सरीयातु

स्वरहृदय
टाकअ कंनी
बरस्किबीज